एकहि बार आस सब पूजी। अब कछु कहबु जीभ करिदूजी।।

फउरे जोगु कपारू अभागा। भलउ कहत दुख रउरेहि लागा।

कहहिं झूठि फुरिबात बनाई। ते प्रिय तम्हहि करुई मैं माई।।

हमहूँ कहबि अब ठकुरसोहती। नाहि त मौन रहब दिनु राती।।

करिकुरूप बिधि परबस कीन्हा। बवासो लुनिअ लहिअ जांदीन्हा।।

कोउ नृप होऊ हमहि का हानी। चेरि छाड़ी अब होब कि रानी।।

जारै जोगु सुभाउ हमारा। अनभल देखि त जाइ तुम्हारा।।

तातें कछुक बात अनुसारी। छमिअ देबि बडिचक हमारी।।

VII. किन्हीं **चार** प्रश्नों पर टिप्पणी लिखिए : (4× 5=20)

1. विद्यापति का कृष्ण
2. समाजसुधारक कबीर
3. प्रेमगाथा काव्य परम्परा में जायसी का योगदान
4. सूरदास की भक्ति
5. तुलसी की समन्वयभावना
6. बिहारी का उक्ति वैचित्र्य

GOVT. BRENNEN COLLEGE CENTRAL LIBRARY THALASSERY

Reg. No. : .....

Name : .....

I Semester M.A./M.Sc./M.Com. Degree (Reg./Sup./Imp.) Examination, November 2014
HINDI LANGUAGE AND LITERATURE (2013 & Earlier Admn.)
Paper III – Ancient and Medieval Hindi Poetry (upto Ritikal)

Time : 3 Hours Max. Marks : 80

I. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर लिखिए : (1×12=12)

'गीतकार विद्यापति' के बारे में लिखिए।

अथवा

कबीर के रहस्यवाद का परिचय दीजिए।

II. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर लिखिए : (1× 12=12)

महाकाव्य के रूप में पद्मावत की आलोचना कीजिए।

अथवा

सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

III. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर लिखिए : (1× 12=12)

अयोध्याकाण्ड के विशेष संदर्भ में भरत का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा

बिहारी की शृंगार भावना पर एक लेख लिखिए।

IV. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (1× 8=8)

विदिता देवी विदिता हो अविरल केस सोहन्ती।

एक अनेक सहस को धारिनि जनि रंगा पुर नटी।।

P.T.O.

कज्जल रूपतुअकाली कहि अए उज्जल रूप तुअ बाणी।

रवि मंडल परचंडा कहिए गंगा कहिअए पानी।।

ब्रह्मा घर ब्रह्मानी कहिए हर घर कहिअए गोरी।

नारायन-घर कमला कहिअए के जान उत्पति तोरी।।

विद्यापति कविवर एहो गाओल जाचक जनके गीत गति।

हासिनि देइ पति गरुड़नाराएन देवसिंह नरपति।।

अथवा

चढ़ा आसाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।

घूम स्याम घौरे घन घाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।

खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।

अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

ओनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारु मदन हौं घेरी।

दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।

पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मँदिर को छावा।

जिन्ह घर कंता के सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्ब।

कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्ब

V. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (1× 8=8)

कहा नर गरबसि थोरी बात।

मन दस नाज टका दस गांठी ऐंड़ौ टेढ़ौ जात।।

बहुत प्रताप गांउं सौ पाए दुइ लख टका बरात।

दिवस चारि की करहु साहिबी जैसे बन हर पात।।

नां कोउ लै आयौ यहु धन नां कोऊलै जात।

रावन हूँ तैं अधिक छत्रपति खिन महिंगए बिलात।।

हरि के संत सदा थिर पूजौ जो हरिनाम जपात।

जिन पर क्रिपा करत है गोबिंद ते सतसंगि मिलात।।

मात पिता बनिता सुत संपति अंति न चलै संगात।

कहत कबीर रांम भजु बउरे अनम अकारथ जात।।

अथवा

गिरि ते ऊँचे रसिक मन बूडे जहाँ हजार

बहे सदा पसु नरन सो प्रेम पयोधि पगार।।

गिरि कांजै कछु कछु रहै कर पसीज लपटाय

लीने मुठि गुलाल अरी छूटत झूठि ह्वै जाय।।

VI. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (1× 8=8)

अजहुँ सावधान किन होहि।

माया विषय भुंजगिनि कौंविष उतर्‌यो नाहिन तोहि।।

कृष्ण सुमन्त्र सुद्ध बनमूरी जिहिजन मरत जिवायो।

बार बार स्रवनन समीप होइ गुरु गरुड़ी सुनायो।।

जाग्यो, मोह मैर मति छूटी, सुजस गीत के गाये।

'सूर' गई अज्ञान मूरछा ज्ञान सुभेषण खाए।

अथवा